# राष्ट्रवाद शब्द समाज के लिए ठीक नहीं : भागवत

## रांची में प्रबुद्धजनों के सवालों के जवाब के दौरान बोले सरसंघचालक, राष्ट्रवाद शब्द राष्ट्रप्रेम की भावना को सीमित करता है तो राष्ट्रीयता विस्तार देती है

**जागरण संवाददाता, रांची :** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा है कि राष्ट्रवाद शब्द समाज के लिए ठीक नहीं है। यह शब्द राष्ट्रप्रेम की भावना को सीमित करता है। वहीं राष्ट्रीयता शब्द इस भावना को विस्तार देता है। वाद शब्द हमेशा स्वार्थ के लिए होता है। स्वार्थ की पूर्ति होते ही मोह भंग हो सकता है, जबकि राष्ट्रीयता से आत्मिक जुड़ाव होता है। रांची में अपने पांच दिवसीय दौरे के तीसरे दिन आइआइएम के सभागार में राज्य के प्रमुख लोगों के साथ बंद कमरे में आयोजित संवाद कार्यक्रम में संघ प्रमुख प्रबुद्ध जनों की ओर से पूछे गए सवालों के जवाब दे रहे थे।

सूत्रों के अनुसार बैठक में उपस्थित एक सज्जन ने राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता को लेकर संघ का विचार जानना चाहा। इस पर उन्होंने कहा कि राष्ट्र किसी वाद से नहीं बंधा है। राष्ट्र जैविक शब्द है, जबकि राष्ट्रवाद कृत्रिम शब्द है। राष्ट्र में जीवन होता है, वह बीमार पड़ता है, फिर स्वस्थ होता है। जबकि राष्ट्रवाद का कोई उद्देश्य पूरा होते ही सदैव के लिए समाप्त हो जाता है।

इस विषय को उन्होंने उदाहरण देकर भी समझाया। मोहन भागवत ने कहा, वैश्विक स्तर पर कहीं भी ईज्म को ठीक से नहीं देखा जाता है। राजनीतिक विकास के क्रम में वाद को अपना लिया गया।

इससे पूर्व गुरुवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रांची महानगर की ओर से आयोजित संघ समागम में स्वयंसेवकों एवं शहर के आमंत्रित लोगों को संबोधित करते हुए डॉ. मोहन भागवत ने यूके की चर्चा करते हुए कहा कि था कि वहां नेशनलिज्म शब्द को गलत रूप में देखा जाता है। इस शब्द को नाजीवाद, फासीवाद, हिटलरिज्म आदि रूप में देखा जाता है। राष्ट्रवाद शब्द पूरी तरह बदनाम है।

आइआइएम में प्रबुद्ध लोगों के साथ बैठक कर बाहर निकलते संघ प्रमुख मोहन भागवत, साथ हैं दाएं से दूसरे आइआइएम के निदेशक व सबसे बाएं प्रांत प्रचारक रविशंकर ● जागरण

जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव राव सदाशिव राव गोलवरकर उर्फ गुरुजी, आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक रहे दीनदयाल उपाध्याय एवं दत्तोपंत ठेंगड़ी के साहित्य में भी राष्ट्रवाद शब्द कहीं नहीं दिखता है।

संघ के प्रचारक और विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री रहे हरेंद्र प्रताप पांडेय ने दैनिक जागरण के संपादकीय पृष्ठ पर छह अप्रैल 2019 को प्रकाशित लेख में भी इस बात का उल्लेख किया था।

आरएसएस के सह सरकार्यवाह मनमोहन वैद्य ने भी पिछले वर्ष विश्व संवाद केंद्र के एक कार्यक्रम में कहा था कि राष्ट्रवाद शब्द सही नहीं है। उसके साथ ही अन्य कई मौकों पर भी वे कह चुके हैं कि राष्ट्रवाद शब्द ठीक नहीं है।

### काश संघ व भाजपा समझती गांधी के राष्ट्रवाद को : कांग्रेस

नई दिल्ली : कांग्रेस ने शुक्रवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत की टिप्पणी को लेकर भाजपा और संघ परिवार पर हमला बोला। कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि आज संघ परिवार और भाजपा ने खुद को राष्ट्रवाद से अलग कर लिया है। अब आप कह रहे हैं कि राष्ट्रवाद का मतलब हिटलरशाही और फासीवाद है, लेकिन अगर आप महात्मा गांधी के राष्ट्रवाद को समझते तो आपको राष्ट्रवाद से खुद को दूर करने की जरूरत नहीं पड़ती। क्योंकि गांधी के राष्ट्रवाद की नींव प्यार है। महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद देश की सभी जातियों और धर्मों को एक साथ लेकर चलने की बात करता है।

Dainik Jagaran, 22.02.2020, Pg. 04